www.thearyasamaj.org

वर्ष-११ अंक-३ २७ नवम्बर २०१३

ओ३म्

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

वैदिक रवि

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

www.thearyasamaj.org

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाः

१. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

(यजु. ३०।३)

२. ओ३म हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु. २५।१०)

३. ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यछायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. २५ ।१३)

४. ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३५ ।१२)

५. ओ३म् येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३२ ।६)

६. ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

(ऋ सं. १० ।सं. १२१ मं. १०)

७. ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।

(यजु. ३२।१०)

८. ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भुयिष्ठान्ते नमऽउक्तिम् विधेम ।।

(यजु. ४० ।१६)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक
वर्ष-११ अंक-३
२७ नवम्बर २०१३
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें
आवरण पृष्ठ २ एवं ३ ५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर) -४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का) २५० रू.
चौथाई पृष्ठ १५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१.	संपादकीय	२
२.	बोध कथा	४
३.	गाय सर्वोत्तम क्यो	५
४.	स्वास्थ्य के लिए अनमोन नुक्सा	६
५.	हंसी का मूल्य	७
६.	गंवादी उम्र तुझे पाने में	९
७.	यह यज्ञ विश्व का नाभि केन्द्र हैं	१०
८.	पुस्तको का जादू	१७
९.	बाल संदेश स्तम्भ	१८
१०.	सभा के सहयोग से भोपाल संभाग...	२१
११.	आर्य परिवार युवक-युवती परिचय....	२२
१२.	वैदिक ज्ञान का महाकुंभ	२४

पत्रिका में प्रकाशित विचार,सामग्री से सपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में आहत समाज

किसी भी तन्त्र को संचालित करने में उसकी आधारशिला, उसकी अपनी रीति नीति होती है। रीति नीति उसे व्यवस्था प्रदान करती है, उसी व्यवस्था में अधिकार व कर्तव्यों का सामंजस्य होकर संगठन को व्यवस्थित चलाया जाता है।

किन्तु केवल रीति नीति नियम कानून बनाने मात्र से उस तन्त्र की सफलता नहीं हों जाती। उस नीति के महत्व को जब तक जिनके लिए उसका निर्माण हुआ वह ठीक–ठीक समझ न ले और न केवल समझ ले अपितु उसे धारण न कर ले तब तक उसके प्रयोजन की पूर्ति नहीं होगी और वह रेती के महल जैसी बनकर रह जावेगी। जन साधारण का एक बड़ा भाग उस वर्ग में आता है जो देश, समाज, संविधान, नियम, कानून को ठीक से नहीं समझ पाता। जब समझ ही नहीं पाता तो उसका पालन करना, उसका लाभ लेना, उसका अनुसरण करना तो बहुत दूर की बात हो जाती है। देश का संविधान देश के प्रत्येक नागरिक से संबंध रखता है, जिसमें उसकी स्वतन्त्रता अधिकार, कार्यसीमाओं को बताया गया है। किन्तु इसका ज्ञान भारत जैसे देश मे कितनों को है ? कितने इसको समझकर जीवन में लाभ उठा पाते हैं ? करोड़ों देशवासियों में गिनती के कुछ लोगों को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता है।

जन–जन तक प्रजातन्त्र की भावना और उसकी रूपरेखा को पहुंचाने का नैतिक दायित्व देश के अग्रणी पंक्ति में आने वाले राष्ट्र की बागडोर जिनके हाथों में रहती है उनका है। वे स्वयं इसका पालन कर अपने चरित्र से और साक्षरता से इसको जन–जन तक पहुंचावे। क्योंकि राष्ट्र का संचालन उसका निर्माण, उसकी सुरक्षा और उन्नति में प्रजातान्त्रिक देश के प्रत्येक नागरिक की समान भागीदारी होती है।

किन्तु कुछ लोगों को आम नागरिकों की यह जागरूकता अपने लिए ख़तरा लगती हैं। इसलिए प्रजातन्त्र के रहस्यों को कुछ लोगों को अपने तक सीमित रखना ही उनका उद्देश्य बना हुआ है।

फिर ज्ञान देने वाला, समझ देने वाला कौन हो सकता है ? अन्धा किसी को रास्ता नहीं दिखा सकता, भ्रष्टाचार और व्यावसायिक राजनीति से घिरे जन प्रतिनिधि क्या किसी को प्रजातन्त्र के महत्व को समझायेगें ?

प्रजातन्त्र के सही अर्थों से दूर व्यक्ति आज भी नौकरशाही और अपने द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों को ही सबकुछ मानकर उनकी दया पर जी रहे हैं। ब्रिटिश काल में एक आम व्यक्ति की जो स्थिति थी उसको अपने घर में, अपने ही व्यक्ति के समक्ष भोग रहे हैं।

प्रजातन्त्र राज्य संचालन की आधारशिला है मतदान। किन्तु समाज का बहुत बड़ा वर्ग अपने संवैधानिक अधिकारों से दूर होने के कारण मतदान करना एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में मानता हुआ मतदान करता है जो किसी के द्वारा समझाने पर, आश्वासन पर, लालच या अन्य प्रकार से

प्रभावित कर दे दिया जाती है। इसमें स्वविवेक, व्यक्ति, पार्टी आदि का कोई विचार नहीं।

यही कारण है आज जाति बल, धन बल और बाहू बल प्रजातन्त्र पर हावी हो रहा है। परिवारवाद चरम सीमा पर राजनीति में फैल गया है जो वंशानुगत व्यापार के रूप में पिता, पुत्र, बहू को विरासत में मिलता है। प्रजातन्त्र का सबसे बड़ा मजाक है दुर्भाग्य यही है।

किसी देश के लिए प्रजातन्त्रीय प्रणाली सर्वोत्तम और समानाधिकार प्रदान करने वाली है। इसके माध्यम से मानव–मानव के मध्य ऊँच–नींच, छोटे–बड़े के उभरे भेदों को नष्ट किया जा सकता है। देश के एक नागरिक के लिए शिक्षा–स्वास्थ सुरक्षा पहली आवश्यकता है। किन्तु आज पहले पायदान शिक्षा से ही अप्रजातान्त्रिक व्यवस्था प्रारंभ हो जाती है। एक वर्ग बमुश्किल अक्षर ज्ञान प्राप्त कर पाता है साधारण सी पढ़ाई करके जैसे तैसे चपरासी क्लर्क मास्टर तक पहुंच पाता है। वहीं दूसरा सक्षम वर्ग जो सम्पन्न वर्ग है लाखों के पैकेज दिलाने वाली उच्च श्रेणी की नौकरी या किसी प्रोफेशन को प्राप्त करने हेतु शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम होता है।

ये असमानता की खाई जीवन के प्रथम पायदान से प्रारंभ होकर अन्त तक बनी रहती है। क्या यही प्रजातन्त्रीय व्यवस्था होना चाहिए ? इन सबका दोष किसे दें, अपराध वहीं अधिक होते है जहां अज्ञानता हो जिन्हें अपने अधिकारों के लिए चिन्ता न हो, कोई प्रयास न हो।

प्रजातन्त्र का सीधा सीधा अर्थ होता है किसी कार्य संचालन में समानाधिकार संयुक्त सांझा। वैसे इसकी परिभाषा कुछ ऐसी ही दर्शायी गई जिसमें सब कुछ आम व्यक्ति को बताया गया। किन्तु वह मुहावरा बन कर रह गया, हाथी के दर्शनीय दांत जैसा बन कर रह गया। कथनी और करनी में जमीन आसमान का अन्तर परिलक्षित होता है।

लालफीता शाही और कुर्सी का नशा क्या कुछ नहीं कर रहा हैं ? बड़े बड़े जघन्य अपराध बड़े बड़े काण्ड कौन कर रहा है ? इसमें शोषण किसका हो रहा है ? कौन सारे जुल्मों को सह रहा है ? वही जिसका यह देश है जिसकी इसमें संचालन में भागीदारी है ? कितना बड़ा धोखा है, प्रजातन्त्र के नाम पर। **जनता का, जनता के लिए, और जनता के द्वारा** प्रजातन्त्रीय राज्य की बात कहकर व प्रजातन्त्र के नाम पर दिया थोथा नारा मन बहलाने के लिए ठीक है किन्तु यथार्तता से बहुत दूर है।

अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा उसकी पृष्ठभूमि में संघर्ष था प्रयास था पाकीस्तान बन गया, बागंला देश बन गया उसके पीछे भी प्रयास था अनेक बातों के लिए जन आन्दोलन से संघर्ष कर उन्हें मनवा लिया जाता है। आततायी स्वच्छन्द सरकार को झुकना पड़ता है। वैसे ही प्रजातन्त्र के महत्व को समझकर उस प्रणाली को लागू करवाने के लिए भी एक सशक्त प्रयास जो जन जन का आन्दोलन हो उसकी आवश्यकता है।

अन्यथा प्रजातन्त्र के नाम पर देश, परिवार, पार्टी, और चन्द लोगों की मुट्ठी में तथाकथित चालाक प्रबुद्ध व्यक्तियों तक ही सिमिट कर रह जावेगा।

www.thearyasamaj.org

बोध कथा –

बातों का जाल

दो राहगीर थे वे दोनों एक ही गॉव पैदल जा रहे थे। एक का नाम विष्णु व दूसरे का नाम मोहन था, विष्णु बहुत चालाक था। दूसरों को हमेशा वह मूर्ख बनाने का प्रयास करता। चलते–चलते मन में अपने साथी राहगीर को मूर्ख बनाने के विचार से कहा, मोहन रास्ता बहुत लम्बा है, अपन कुछ बातें करते हैं, रास्ता कट जावेगा, पर एक शर्त है तू मेरी बात को मना नहीं करेगा, मैं तेरी बात को मना नहीं करूँगा। जो मना करेगा वह 500 रू. जुर्माना भरेगा। मोहन विष्णु को बहुत अच्छी तरह से जानता था कि यह बहुत चालाक है पर उसने विष्णु की शर्त स्वीकार कर ली।

बात विष्णु ने प्रारंभ की बोला – एक बार बहुत जोर की बारिश हुई उस समय मेरे दादाजी जिन्दा थे। गांव के मैदान में हजारों लोग इकट्ठे थे। मेरे दादाजी के पास बहुत बडा छाता था। उन्होंने मैंदान में छाता खोल दिया हजारों लोग उस छाते के नीचे आकर खड़े हो गए और भीगने से बच गए। फिर मोहन बोला–सही है न। बात तो पूरी गप थी, किन्तु मोहन उसे मना करता तो 500 रू. देने पड़ते, उसने कहा हॉ सत्य है।

अब मोहन की बारी थी, मोहन ने कहा तुम्हारे दादाजी ने जब छाता लगाया था वह पानी मेरे दादाजी ने बरसाया था। विष्णु ने कहा कैसे ? विष्णु ने कहा– उस साल पानी नहीं गिर रहा था, तो मेरे दादाजी ने बहुत बड़े भाले से बादल में छेद कर दिया। छेद कुछ बड़ा हो गया था इसलिए गांव में पानी ही पानी हो गया। सही है या नहीं, विष्णु से हॉ भर दी।

विष्णु ने फिर कहा एक बार बहुत जोर की आंधी चली, मकान उड़ने लगे, झाड़ गिरने लगे, यहां तक की अपने गांव के पशु और आदमी भी उड़ने लगे। उस समय मेरे दादाजी ने एक बहुत बड़ी दिवार यहीं पत्थरों की बनाई थी, जो पहाड़ के समान हो गई, ये पहाड़ जो गांव के बाहर है वह उन्हीं ने मिट्टी, पत्थर इकट्ठा करके बनाये थे। बोलों सही है ना, मोहन ने सिर हिलाते हुए कहा, सही है।

मोहन ने सोचा इसे चुप करना जरूरी है, कब तक इसकी झूठी हॉ में हॉ मिलाता रहूँगा। कुछ उपाय करना चाहिए। सोचकर मोहन बोला – देखो भाई, तुम्हारे दादाजी और मेरे दादाजी दोनों दोस्त थे। एक बार गांव में अकाल पड़ा तो मेरे दादाजी से तुम्हारे दादाजी ने 10 बोरा गेहूँ उधार लिया। गेहूँ उधार लेते समय यह भी कहा था कि यदि मैं यह उधारी नहीं चुका पाऊँगा तो मेरे लड़के या मेरे पोते चुका देगें। इस प्रकार वह 10 थैला

www.thearyasamaj.org

गेहूँ आज तक तुम्हारे परिवार वालों पर बाकी चला आ रहा है। आपने मेरे दादाजी की शर्त के अनुसार अब आपको मुझे 10 बोरा गेहूँ लौटाना चाहिए, बोलो सही बात है ना ?

अब तो विष्णु की चालाकी खुद को ही उलझा चुकी थी। यदि वह कहता है कि सही है तो 10 बोरा गेहूँ देना पड़ता है। यदि वह कहता है गलत है तो 500 रू. मोहन को देने पड़ेगें।

इस प्रकार चालाक विष्णु अपनी बातों के जाल में खुद ही फंस गया और 500 रू. देना पड़े।

अपने को बहुत समझदार समझने वाले और दूसरों को मूर्ख समझने वाले ऐसे ही जाल में उलझते हैं।

गाय सर्वोत्तम क्यों !

गौ और कृषि अन्योन्याश्रित हैं। इसीलिए महर्षि ने गोकृष्यादिरक्षिणी सभा नाम रखा था। गाय का दूध सर्वोत्तम क्यों हैं ? इसमें निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं हैं –

1. गाय का दूध पीला और भैंस का दूध सफेद होता है। इसीलिए इसके दूध के विशेषज्ञ कहते हैं कि गाय के दूध में सोने का अंश होता है जो कि स्वास्थ्य के लिए उत्तम है और रोगनाशक है।

2. गाय का दूध बुद्धिवर्धक और आरोग्यप्रद है।

3. गाय का अपने बच्चे के साथ स्नेह होता है जबकि भैंस का बच्चे के साथ ऐसा नहीं होता है।

4. गाय के दूध में स्फूर्ति होती है। इसीलिए गाय के बछड़े व बछियॉ खूब उछलते कूदते फिरते हैं। भैंस का दूध पीने से आलस्य व प्रमाद होता है।

5. गाय के बछड़े को 50 गायों या अधिक में छोड़ दिया जाय तो वह अपनी माता को जल्दी ही ढूँढ़ लेता है। जबकि भैंस के बच्चों में यह उत्कृष्टता नहीं होती।

6. गाय का दूध तो सर्वोत्तम होता ही है, साथ ही गाय का गोबर व मूत्र भी तुलना में श्रेष्ठ है। गाय का गोबर स्वच्छ व कीटनाशक होता है। गाय की खाद तीन वर्ष तक उपजाऊ शक्ति बढ़ाती है किन्तु भैंस की खाद तो एक दो वर्ष बाद ही बेकार हो जाती है और गौमूत्र का स्प्रे करके कीड़ों के नाश में भी उपयोग लिया जाता है।

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य के लिए अनमोल नुक्सा
आपकी हंसी

जी हॉ, मनुष्य को परमात्मा की अनमोल बहुत लाभकारी देन हंसी भी है। मनुष्य के अतिरिक्त किसी भी अन्य योनि के प्राणी को ऑखों से ऑसू गिराते तो देखा होगा किन्तु हंसते हुए किसी को नहीं। यह सौभाग्य केवल मनुष्य को प्राप्त है।

हंसी स्वास्थ के लिए अचूक–सर्वोत्तम और बिना खर्च का इलाज है। इस बात को समझते हुए सुबह–सुबह कई स्थानों पर ग्रुपों में हंसी के ठहाके लगाते, बगीचों में या किसी स्थान पर अनेक व्यक्ति मिलते हैं। लॉफिंग

एक हंसमुख व्यक्ति स्वयं सुख भोगता है और दूसरों को भी देता है। गुमसुम चुप रहने वाला, उदासी का चेहरा माथे पर हमेशा सलवटें रखने वाला स्वयं तो कुंठित रहता ही है, दूसरों का भी मूड़ बिगाड़ देता है। शक्ल से मनहूसीयत फैलाने वाले को कोई पास बैठाना नहीं चाहता। परन्तु हंसमुख व्यक्ति को आवाज देकर बुलाते हैं और चाहते हैं कुछ देर ये और रूक जावें।

कुछ हमेशा मुंह चढ़ाए रहते हैं, उनकी शक्ल देखकर लगता है बेचारा बड़ा दुःखी है, परेशान है। कुछ इसी स्वभाव के कारण शक्ल स्थायी रूप से रोनी बना लेते हैं। पूछा भाई रो क्यों रहे हो ? उत्तर मिला, नहीं–नहीं शक्ल ही ऐसी है।

तो जन्म–जन्मान्तरों के शुभ कर्मों से मिला इस जिन्दगी को खुशनुमा, अच्छे उत्साही विचारों से सुन्दर सजीली बनाइए।

इस संबंध में विश्व विख्यात प्रसिद्ध विचारक **स्वेट मार्डन** ने हंसी से संबंधित बड़ी उपयोगी बातों को लिखा है, जिसमें हंसी से जीवन में आने वाली चिन्ताओं, निराशाओं, बाधाओं और दुःखों से बचने के सरल उपाय बताए हैं।

झगड़ालु – निरूद्देश्य गतिहीन एवं निरर्थक जीवन में किस प्रकार नवीन उत्साह संचित हो सकता है। खोया हुआ आत्म विश्वास कैसे लौट सकता है आदि पर बहुत ही उपयोगी और लाभकारी बातें बतायी हैं।

तो आईए, स्वेट मार्डन द्वारा लिखे विचारों में से कुछ पर विचार करते हैं। अपने अच्छे स्वस्थ दीर्घायू जीवन के लिए इस लेख को निरन्तर पढ़ते रहें।

www.thearyasamaj.org

हंसी का मूल्य – **"हँसो, और मोटे हो जाओ"** यह उक्ति कितनी सारगर्भित है ! यदि प्रत्येक व्यक्ति हंसने की शक्ति को पहचान ले और जान ले कि हंसी से स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की प्राप्ति होती है, तो संसार के समस्त रोगों का नाश हो जाए।

भगवान ने हमें हंसी इसलिए दी है कि रोगों से बचने के लिए दवा पर खर्च होने वाले बहुत से धन की बचत हो सके। प्रकृति ने हमारे भीतरी अंगों के व्यायाम और आनन्द प्रदान करने के लिए हंसी बनाई है।

हंसी का आरम्भ फेफड़ों व वक्षोदर–मध्यस्थ पेशी से होता है। हंसी के द्वारा जिगर, मेदा और अन्य भीतरी अंगों में एक ऐसी फड़कन होती है, जिससे हम उन अंगों में आनन्दमयी सनसनी महसूस करते हैं। इस आनन्द और व्यायाम की समता घुड़सवारी से मिलने वाले आनन्द और व्यायाम से हो सकती है। जब हमारा आमाशय खाये हुए भोजन को पचाने लगता है तब दही बिलोने के समय मथानी के चलने जैसा मंथन सा होता है। जितनी बार आप पूरी सांस लेते हैं, उतनी ही बार वक्षोदर की मध्यस्थ पेशी लचकती है और मेदा या आमाशय में नृत्य जैसी फड़कन या थिरकन होती है। इससे पाचन संस्थान तेजी से हरकत करने लगता है, हृदय की धड़कन तेज होती है, रक्तवाहिनियों में बहुतायत से रक्त प्रवाहित होता है। **डॉ. ग्रीन** का कहना है कि जब आप पूरा खुलकर हंसते हैं, उस समय आपके शरीर को कोई भी छोटी से छोटी धमनी और रक्तवाहिनी ऐसी नहीं रहती जिसमें लहर न उठती हो।

डॉक्टरी शब्दों में इस बात को इस प्रकार कहा जा सकता है कि हंसी से रक्तवाहिनी, नियन्त्रक नाड़ी केन्द्र उत्तेजित होता है, इससे धमनियों या रक्तवाहिनियों का विस्तार होता है और उनमें ऐसी हरकत पैदा होती है कि रक्त का प्रवाह तेज़ हो जाता है। हंसी से श्वासाच्छवास क्रिया तेज होती है, और सारे श्वास, संस्थान को ताजगी प्राप्त होती है। इससे ऑखों में चमक आती है, पसीना अधिक होता है, फेफड़े फैलते हैं और फेफड़ों के ऐसे कोष्ठों में से भी गन्दी हवा बाहर निकलती है, जो साधारणतया सांस लेने पर नहीं हिलते या कम हिलते हैं।

संक्षेप में हंसी के द्वारा शरीर में एक ऐसी समता या संतुलित अवस्था आती है, जिसे हम स्वास्थ्य कहते हैं। स्वास्थ्य का अर्थ हैं शरीर के अंग, प्रत्यंग का सही–सही काम करना, एक–दूसरे अंग के संतुलन में ठीक–ठीक

www.thearyasamaj.org

चलना। शरीर का यह संतुलन एक रात नींद न आने से अथवा किसी दुःख या चिन्ता से बिगड़ जाता है, पर हंसी के द्वारा यह बिगड़ा हुआ संतुलन फिर ठीक हो जाता है।

संक्षेप में हंसी के द्वारा शरीर में एक ऐसी समता या संतुलित अवस्था आती है, जिसे हम स्वास्थ्य कहते हैं। स्वास्थ्य का अर्थ है शरीर के अंग, प्रत्यंग का सही–सही काम करना, एक–दूसरे अंग के संतुलन में ठीक–ठीक चलना। शरीर का यह संतुलन एक रात नींद न आने से अथवा किसी दुःख या चिन्ता से बिगड़ जाता है, पर हंसी के द्वारा यह बिगड़ा हुआ संतुलन फिर ठीक हो जाता है।

यह हिब्रू कहावत शत–प्रतिशत ठीक है कि **"प्रसन्नता से भरा हृदय दवा का काम करता हैं।" डॉ. होम्स** का कहना है कि **"प्रसन्नता परमात्मा की दी हुई औषधि या दवा है।"** यह ऐसी औषधि है जिसमें हर मनुष्य को स्नान करना चाहिये। आवश्यकता से अधिक चिन्ता जीवन का कूड़ा है, इसे धोने के लिए हास्य की नितान्त आवश्यकता है। एक और स्थान पर होम्स ने कहा है – **"यदि आपको किसी डॉक्टर के पास जाना ही है तो ऐसे डॉक्टर को चुनो जो प्रसन्न हृदय और हंसमुख हो।"**

क्या एक खुश मिजाज डॉक्टर आपको अपनी गोलियों से बढ़कर लाभ नहीं पहुंचाता ? **डॉक्टर मार्शल हॉल अपने रोगियों के लिए अधिकतर जिस दवा को बताया करते थे, उसका नाम हैं "प्रंसन्नता"।** वह कहा करते थे कि यह दवाई अर्थात् प्रसन्नता दवाखाने में मिलने वाली अन्य दवाईयों की अपेक्षा कहीं अधिक लाभकारी है।

पश्चिमी न्यूयॉर्क में डॉ. बर्डिल "हंसता हुआ डॉक्टर" के नाम से प्रसिद्ध थे। उनका चेहरा सदा ही खिला रहता था। उनकी हंसी, दिल्लगी दूसरों पर गहरा प्रभाव डालती थी। वह दवाई बहुत कम दिया करते थे, पर फिर भी बड़े सफल डॉक्टर थे।

संसार में डॉक्टरी का सबसे प्रसिद्ध पत्र "लन्दन लेंसेट" है। उसने प्रसन्नता के विषय में वैज्ञानिक एवं मूल्यवान तथ्यों पर इस प्रकार प्रकाश डाला है –

प्रसन्नता की शक्ति बीमार और निर्बल व्यक्ति के लिए बहुत ही मूल्यवान है। प्रसन्न होने की शक्ति द्वारा बीमार जीवित बच जाता है और दुर्बल की आयु लम्बी हो जाती है। इसलिए यह सबसे अधिक महत्व की बात है कि अपने मन को जहां तक हो सके प्रसन्न रहने का अभ्यास डाला जाये।

तो, नियम बना लो, प्रतिदिन कुछ समय जरूर हंसेगें।

क्रमशः.....

www.thearyasamaj.org

गंवादी उम्र तुझे पाने में

गंवादी उमर पूरी तुझे पाने में।
भटकता फिरा, सारे जमाने में।।

जाने कितने उपवास, व्रत कर डाले।
घूमे जाने कितने मंदिर, और शिवाले।।

तीरथ स्नान जिन्दगी भर करता रहा।
शरीर को तपा धूप, सर्दी सहता रहा।।

नाम से तेरे लुटता रहा, धर्म के ठेकेदारों से।
चढ़ावा चढ़ाता रहा, वहां हजारों से ।।

पर तू तो दाता है, सबका भंडार तू।
देवता तू, सबका, पालन हार तू।।

तुझे तेरी ही चीजें देता रहा।
सूखी नदिया में नाव खेता रहा।।

पर ये सब बाहर की आंखों ने करवाया।
ज्ञान चक्षु का ख्याल ही नहीं आया।।

ढूंढ़ना था जहां, बस वहीं ढूंढ़ा नहीं तुझे।
भटका दिया, उलझा दिया, जमाने ने मुझे।।

पहले ही अगर मन मंदिर में, तुझे देखा होता।
तो तेरे नाम पर नहीं होता, कोई धोखा।।

देखा जब अन्दर की आंखें खोल, तो तुझे हरदम वहां पाया।
तू इतना करीब था कि **प्रकाश**, तुझे समझ ही न पाया।।

प्रकाश आर्य, महू

www.thearyasamaj.org

यह यज्ञ विश्व की नाभि (केन्द्र) है।

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः

यजुर्वेद 23/62

मंत्र के इस भाव को पढ़कर एक विचार उत्पन्न होता है कि समस्त विश्व की नाभि अर्थात् केन्द्र यज्ञ को क्यों बताया ?

शरीर में नाभि का बहुत महत्व है यदि नाभि में कोई विकृति आ जावे अपने स्थान से थोड़ी सी इधर–उधर हो जावे तो सम्पूर्ण शरीर अस्वस्थ, अव्यवस्थित हो जाता है। एक दृष्टि से शरीर का मुख्य केन्द्र बिन्दू नाभि है जहां से सब नियन्त्रित होता है।

वेद मन्त्रों में विषय को सरल करने तथा समझाने की दृष्टि से अनेक उदाहरण दिए है। उनका सन्दर्भ विषय से बहुत स्पष्ट और सटिक होता है। इसी प्रकार यज्ञ की शरीर के अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग नाभि से तुलना की है। वेद का एक शब्द या अक्षर भी बिना कारण उल्लेखित नहीं है उसका कोई महत्व अवश्य ही होता है यह हमें पूर्ण विश्वास से मानना चाहिए।

इसी विचार को ध्यान में रखते हुए यज्ञ विश्व की नाभि है परमात्मा का यह उपदेश भी सार्थक है अनुकरणीय है।

सम्पूर्ण विश्व की उन्नति, अवनति का ज्ञान रखने वाला इस परिस्थिति को समझने वाला एकमात्र मानव ही है। यदि विश्व का मानव सुखी है तो कहा जावेगा सम्पूर्ण विश्व सुखी है, यदि संसार का मानव दुःखी है तो यही कहा जावेगा कि संसार दुःखी है। तात्पर्य यह कि संसार के सुखी या दुःखी होने का मापदण्ड मानव है।

मनुष्य का जीवन दो बातों पर आधारित है बाहरी जिसे भौतिक कहते हैं एवं दूसरा आन्तरिक।

आश्चर्य है ये दोनों ही बातें यज्ञ से नियन्त्रित हैं, इन दोनों का केन्द्र यज्ञ है, इस पर विचार करते हैं। यज्ञ को शतपथ ब्राह्मण में कहा **"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"** अर्थात श्रेष्ठ कर्मों में भी सर्वश्रेष्ठ कर्म, यज्ञ है।

विश्व को व्यवस्थित व नियन्त्रित रखने के लिए सर्व प्रथम आवश्यक है जीवन की सुरक्षा और जीवनोपयोगी तत्वों की।

जीवनोपयोगी तत्वों को देखें तो शरीर (स्वास्थ) व प्राण महत्वपूर्ण है। जिन साधनों से स्वास्थ्य व प्राण बने रहें अर्थात् मनुष्य अधिक समय जीवित भी रहे और स्वस्थ्य भी रहे उनमें प्रमुख है आहार, जल–वायु–वनस्पति (औषधि) आदि हैं।

www.thearyasamaj.org

इनके बिना जीवन संभव नहीं है, जब तक ये शुद्ध व पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते रहे तो समस्त मानव जीवन सुगम, स्वस्थ, दीर्घायु रहा। किन्तु अन्यान्य कारणों से जीवनोपयोगी साधन पर्याप्त मात्रा में और शुद्ध रूप में नहीं प्राप्त होने, से जीवन दुर्भर, रोगी और अल्पायू वाला होने लगा इसमें कोई सन्देह नहीं।

यज्ञ से अनेक लाभ इस भौतिक जगत को होते हैं यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है इस प्रक्रिया पर अनेक अन्वेषण हुए जिनसे चमत्कारिक लाभ हुए इसके अनेक उदाहरण सत्य घटनाओं पर आधारित विद्यमान हैं।

यज्ञ का प्रभाव मनुष्य जीवन पर तो है ही पेड़, पौधों, वनस्पतियों पर भी इसका बहुत असर होता है। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण मेरी स्वयं की जानकारी में कुछ है जिन्हें प्रस्तुत कर लेख में अपनी बात की पुष्टि करना उचित समझता हूं।

महू (म. प्र.) में माल रोड पर श्री इन्द्रजीत गोस्वामी रहते थे। उनके मकान के बाहर एक जाम का पेड़ था परन्तु उसमें जाम नही के बराबर लगते थे, फल पकने के पहले ही सूख जाता या डाल से गिर जाते थे।

उसी मकान को श्री इन्द्रजीत गोस्वामी ठेकेदार ने किराए से रहने के लिए प्राप्त किया और रहने लगे। श्री गोस्वामी की पत्नि बड़ी धामिक प्रवृत्ति की महिला थी वे प्रतिवर्ष अपने यहां वैदिक पद्धति से 7 दिवसीय वेद पारायण यज्ञ करवाती थी। यह यज्ञ प्रायः एक विदुषी माता करूणा देवी करवाया करती थी।

संयोगवश यज्ञ स्थल उसी जाम के पेड के पास था और यज्ञ बडे स्तर पर होता था। दो वर्ष के यज्ञ सम्पादन होने का परिणाम हुआ, वह जाम के पेड पर देखने को मिला वह आश्चर्यजनक था। वृक्ष पर जाम का फल बहुत अधिक मात्रा में, तथा आकार में बड़ा लगने लगा उसका स्वाद भी अच्छा मिठास लिए हो गया। यह यज्ञ से प्राप्त उर्जा का प्रभाव था।

इसी प्रकार जबलपुर के पास एक आम के वृक्ष के नीचे ही बडे यज्ञ का आयोजन हुआ तीन वर्ष तक निरन्तर उस वृक्ष के फल व आकार संख्या में वृद्धि होती रही, तीसरे वर्ष की फसल का आम जब प्रदर्शनी में रखा तो उस वृक्ष के आम को प्रथम पुरूस्कार मिला।

महू के ही श्री वेदप्रकाश आर्य जो पारसी गली में रहते हैं उनके आंगन में एक अंगूर की बेल लगी हुई थी। उसकी बढ़त सामान्य से कम थी किन्तु उनके द्वारा यज्ञ की राख जो कई दिनों के यज्ञ से इकट्ठी हो गई थी वह उन्होंने उसकी जड़ में डाल दी। इसका प्रभाव कुछ दिनों में ही देखा गया कि वह बेल जितनी 5–6 साल में नहीं बढ़ी थी उतनी एक बारिस याने 3–4 माह में बढ़ गई।

अभी–अभी कुछ दिनों पूर्व खरगौन जिले के ग्राम महेश्वर के एक परांजपेजी का दैनिक टाईम्स ऑफ इण्डिया में यह बयान प्रकाशित हुआ था कि उसने अपने

www.thearyasamaj.org

खेत पर यज्ञ करना प्रारम्भ किया इससे उसके खेत की पैदावार पर काफी अच्छा प्रभाव हुआ है।

वैज्ञानिक प्रगति की दौड़ में अग्रणी अनेक देश अमेरिका, जापान में यज्ञ के प्रभाव का फसल व वनस्पति पर परिक्षण किया गया वहां भी यज्ञ पद्धति को महत्व दिया जा रहा है।

यज्ञ कोई जादू–टोना नहीं है कोई ईश्वरीय या दैविय चमत्कार भी नहीं है। यज्ञ विधि सम्पन्न करने में जिन पदार्थों का उपयोग होता है वे सभी पौष्टिक व स्वास्थ वर्धक औषधि है। अग्नि के सम्पर्क से उनकी क्षमता कई गुना बढ़ जाती है और वायु मण्डल के माध्यम से दूर–दूर तक फैलकर अपना प्रभाव छोड़ती है। इस कारण यज्ञ का प्रभाव पेड, पौधों, वनस्पतियों पर भी होता है। यज्ञ से पेड, पौधे, वनस्पति, अनाज की वृद्धि तो होती है इसके प्रभाव से उनकी पौष्टिकता भी प्राप्त होती है। जब अनाज, फल, फूल, औषधियां शुद्ध व पौष्टिक होंगी और ऐसी वस्तुओं का उपयोग जब किया जावे तो उसका असर स्वास्थ पर निश्चित है। इस प्रकार यज्ञ खाद्यान्न पदार्थों को शुद्ध व पौष्टिक बनाता है।

यज्ञ से वायु मण्डल की शुद्धि होती है। आज का वातावरण विशैला हो रहा है, प्रदूषण एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में सामने खड़ा है। वैज्ञानिाकों का मत है यदि प्रदूषण इसी गति से बढ़ता गया तो आने वाले 100 वर्षों में प्रत्येक को ऑक्सीजन की पेटी बॉधकर चलना होगा।

तेजी से बढ़ते डीजल, पेट्रोल चलित वाहन, नए–नए विशाल कल कारखाने, फ्रीज, गैस, एयरकंडीशनर न जाने कितने वैज्ञानिक खोज पर आधारित साधन प्रकृति के वातावरण को दूषित करते हैं। इसी प्रदूषण के कारण प्रकृति का संतुलन गड़बड़ा रहा है। कभी सर्दी के मौसम में गर्मी का एहसास तो कभी गर्मी में बारिश या सर्द मौसम पाया जाता है। बारिश कभी समय से पूर्व तो कभी समय बीत जाने पर होती है। गर्मी का पारा वर्षों का रेकार्ड तोड रहा, कहीं बारिश ने कहर ढ़ा दिया ये सब जीवन को प्रभावित करने वाले कारण हैं।

यह सब प्राकृतिक वातावरण में फैल रहे प्रदूषण का ही कारण है। प्रदूषण का बहुत प्रभाव स्वास्थ्य पर जीवन पर पड़ता है।

प्रदूषण के कारण अनेक प्रकार की बिमारियां बढ़ रही है, चर्म रोग फैल रहे हैं, स्वास्थ्य व आयु में गिरावट आ रही है। नजर के चश्में छोटे–छोटे बालकों को लग रहे हैं, कम उम्र में बाल सफेद या उड़कर गंजापन दे रहे हैं।

इन सारी समस्याओं का निदान भी यज्ञ है। यज्ञ से निर्मित स्वास्य वर्धक यज्ञ में अग्नि के सम्पर्क में आए सुगन्धित औषधि युक्त पदार्थ से उत्पन्न का प्रभाव पृथ्वी व द्योलोक में मिला होता है। इससे प्रदूषण, विशैलापन समाप्त हो जाता है इसके दो उदाहरण प्रत्यक्ष रूप से जिनके द्वारा देखे गए वे अभी जीवित हैं।

www.thearyasamaj.org

भोपाल में लगभग 20 वर्ष पूर्व किसी फैक्ट्री से जहरीली गैस का रिसन हो गया उसका कुप्रभाव हजारों नागरिकों पर हुआ। रात के अन्धेरे में नागरिक अपनी जान बचाकर कई–कई किलोमीटर तक भागे। अनेक इससे प्रभावित होकर जान गवां बैठे किसी की ऑख तो किसी की कान–नाक की स्थाई अयोग्यता हो गई।

किन्तु ऐसे स्थान पर कुछ ऐसे परिवार रहते थे जो दैनिक यज्ञ अपने घर पर करते थे। उनके पास यज्ञ सामग्री व यज्ञ पात्र उपलब्ध थे उन्होंने अपने घर के दरवाजे बन्द किए और तुरन्त अग्नि प्रज्वलित कर यज्ञ प्रारम्भ कर घी और हवन सामग्री की आहुतियॉ देना प्रारंभ कर दिया। परिणाम स्परूप उन परिवारों को कहीं जाना नहीं पड़ा और गैस का भी उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

काफी दिनों तक शहर के उस क्षेत्र में गैस की दुर्गन्ध व प्रभाव रहने पर वहॉ मोहल्ले–मोहल्ले में बड़े–बड़े यज्ञ आर्य समाज के माध्यम से किए गए व वातावरण शुद्ध किया गया।

इसी प्रकार महाराष्ट्र के दुधी ग्राम में प्लेग फैल गया आकस्मिक मौत होने लगी ऐसे समय आर्य समाज के सन्यासी स्वामी कर्तव्यानन्द ने यज्ञ करने की प्रेरणा दी। गली–गली में बड़े–बड़े यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया। इसे सामाजिक कर्म मानकर वहां कें मुस्लिम सज्जनों ने भी इसमें हिस्सा लिया और प्लेग के प्रभाव को रोका ही नहीं समाप्त कर दिया।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें यज्ञ का प्रभाव हुआ है प्रदूषण दूर हुआ है। यज्ञ से आयु और प्राण दोनों को बल मिलता है इसीलिए तो कहा गया–

आयु यज्ञेन कल्पताम – यज्ञ से आयु समर्थ करो।

प्राणः यज्ञेन कल्पताम – यज्ञ से प्राण समर्थ करो।

मनुष्य जीवन व पेड़, पौधों, वृक्षों के लिए पानी आवश्यक वस्तु है। पानी ही अन्न, वनस्पति, खेती का आधार है। किन्तु प्रकृति की बदली हुई स्थिति में आज पानी की निरन्तर कमी हो रही है जल स्तर नीचे जा रहा है। नदियां, तालाब, कुंए, नलकूप वर्षाऋतु के कुछ दिन बाद ही सूखे दिखाई देते हैं।

वनों में वृक्षों की कमी हो रही, नए पेड पौधे पानी के अभाव में पनपते नहीं। इन सबका असर तथा विशैली गैस व धुंए के बादल आकाश में जाकर सारी अव्यवस्था उत्पन्न कर रहे हैं। जन जीवन अन्न, जल के अभाव में भूखों मर रहा है। कहीं–कहीं तो मीलों पानी नहीं है, ऐसे भी स्थान हैं जहां पानी को पाना उनके लिए बडी उपलब्धि मानी जाती है।

किन्तु इस समस्या को भी यज्ञ के माध्यम से सुलझाया जा सकता है।

यज्ञ से वर्षा संभव है हजारों स्थानों पर यज्ञ के माध्यम से वर्षा करवाई गई है इसके अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं।

www.thearyasamaj.org

विदेशी वैज्ञानिकों ने कृत्रिम वर्षा करवाने का एक यन्त्र बनाया है जिसका आकार यज्ञ कुण्ड के समान ही है।

भगवान कृष्ण ने इसी बात का गीता में यह सन्देश दिया है –

यज्ञात् भवति पर्जन्यों।

अर्थात् – यज्ञ से वर्षा होती है। इतना ही नहीं अन्न प्रकृति के लिए भी यज्ञ का महत्व बताते हुए योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं –

अन्नाभ्दवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्न संभवः।

यज्ञाभ्दवति पर्जन्यो यज्ञ कर्म समुभ्दवः।। गीता 3/14

मानव शरीर को अन्न की, अन्न को वर्षा की और वर्षा के लिए बादल होना जरूरी है। वर्षा के बादलों के लिए यज्ञ सहायक है। इस प्रकार यज्ञ अन्न, जल प्रदान करने में भी सहयोगी है।

इन सारी स्थितियों पर विचार करने के उपरान्त ही वायु, अन्न, जल की शुद्धता व प्रदूषण रहित वातावरण बना रहे इस हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यह विचार दिया कि **प्रत्येक व्यक्ति इस सृष्टि को दूषित करता है। इसलिए प्रतिदिन हर गृहस्थ को दैनिक हवन करना चाहिए।**

उपरोक्त विचारों से यह स्पष्ट हो गया कि भौतिक दृष्टि से अन्न, जल, वायु, वनस्पति को प्रदूषण से बचाने के लिए यज्ञ महत्वपूर्व कर्म है। इसलिए भौतिक दृष्टि से इसके महत्व को कम नहीं आकां जा सकता और भौतिक व्यवस्था, सुरक्षा व उर्जा की दृष्टि से यज्ञ विश्व की नाभि है यह बिल्कुल सही है।

हमारे पूर्वज अज्ञानी नहीं थे। स्वास्थ, चरित्र और सदाचार के प्रति बहुत जागरूक थे, इसीलिए प्राचीन समय में बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन होता था। राज्य की ओर से राजा स्वयं ये करवाते थे इसके पीछे यही समाज कल्याण व सुरक्षा की भावना थी। जैसे–जैसे इससे हम दूर होते गए दुःखों, बीमारियों के नजदीक हो रहे हैं।

विश्व उत्थान, सुख–शान्ति, उन्नति का दूसरा आन्तरिक पहलू है आचार–विचार–व्यवहार इनसे ही स्वर्ग और इनसे ही नर्क का अनुभव होता है।

देवत्व का आधार भी यज्ञ है। यदि जीवन की अन्तरिक स्थिति ठीक नहीं है तो मात्र बाहरी साधन सर्वांगीण उन्नति के आधार नहीं हो सकते। मनुष्य का शुद्ध अन्तःकरण ही आत्मोन्नति, शाश्वत सुख व सफलता का आधार है।

www.thearyasamaj.org

आज के वातावरण में मनुष्य का सोंच केवल अपने या अपने वालों तक सीमिटकर रह गया है। परमार्थ की भावना की निरन्तर कमी हो रही है। स्वार्थ मानव जीवन का लक्ष्य बन चुका है। परिणाम समाज में घोर असंतोष, अन्याय व्याप्त है। मानव–मानव का दुश्मन बन गया अपने छोटे से लाभ के लिए वह बड़े से बड़ा पाप करने में संकोच नहीं करता। किसी का बहुत नुकसान भी उसके छोटे से लाभ के लिए कोई अर्थ नहीं रखता। स्वार्थ व मतलब की आन्धी में रिश्तों को वह अनदेखा कर रहा है। इन सबके पीछे उसकी संकुचित भावना परोपकार विहीन प्रवृत्ति ही है।

इस मानसिकता को यज्ञ के माध्यम से दूर किया जा सकता है। यज्ञ का सम्पादन देवपूजा, दान, संगतिकरण ये तीन संदेश देता है। एक याज्ञिक के स्वभाव में देवत्व, संगठन और दान की भावना आती है। उसके विचार अपने तक सीमित नहीं रहते हैं। वह यज्ञ के सम्पादन में कई बार कहता है इदन्नमम–इदन्नमम अर्थात् यह मेरा नहीं है, यह मेरा नहीं है। न चाहते हुए भी यज्ञ का लाभ सबको पहुंचाता है। त्याग भाव से नित्य यज्ञ उसके जीवन को मम केवल मेरा की भावना से दूर कर देता है।

यह वह कर्म है, जिसे करने वाला तो लाभ प्राप्त करता ही है किन्तु उसके साथ ही दूसरों को भी उसका लाभ मिलता है। इतना ही नहीं, यह गुप्त दान के समान है, यज्ञकर्ता के चाहने या ना चाहने पर भी सबको लाभ पहुंचाता है। इसीलिए इसे श्रेष्ठतम् कर्म कहा, इससे दान की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है। यज्ञ करने वाला अपना समय, सामग्री और धन लगाकर यज्ञ करता है किन्तु उसके परिणाम के लिए कहता है **"इदन्नमम्"** अर्थात् यह मेरा नहीं। इस प्रकार दान की भावना का द्योतक यज्ञ कर्म है। दान की प्रवृत्ति लोभ, मोह, राग, द्वेष, कृपणता का अन्त कर सहयोग व दया का भाव देती है। इसी प्रवृत्ति से संसार सुखी हो सकता है, भाईचारा, एक–दूसरे के प्रति सहयोग, सद्भावना आ सकती है।

हम देवताओं की पूजा पानी से, वस्तुओं से करते हैं किन्तु वे उसे प्राप्त नहीं करते जो उन्हें चढ़ाते हैं वह उन तक नहीं पहुंच पातीं। देवताओं को खिलाना है तो उसका एक ही माध्यम है उनको यज्ञाग्नि के माध्यम से तृप्त किया जा सकता है यज्ञ में डाले पदार्थ पूरे ब्रह्माण्ड में फैलते हैं। इसलिए बताया गया,देवताओं का मुख अग्नि है **"अग्निं देवस्य मुखम्"** देवताओं को प्रसन्न करने उनको देने के लिए यज्ञ ही एक माध्यम है।

यज्ञ एक पवित्र कर्म माना जाता है तथा जब इसका सम्पादन होता है तो परिवार, संबंधी इष्ट मित्र सभी एकत्रित होते हैं। बड़े आयोजनों में तो पूरे गांव व नगर के व्यक्ति संयुक्त रूप से एकत्रित होकर इसे करते हैं। इस प्रकार यह सबको संगठित करता है, याज्ञिक कर्म में अनेक व्यक्ति जब एकत्रित होकर यह शुभ कर्म करते हैं तो प्रेम भाव व संगठन बढ़ता है।

www.thearyasamaj.org

जब ये स्थिति निर्मित हो जावें, तो स्वर्ग की कहीं और कल्पना करने की आवश्यकता नहीं, वह इसी धरती पर वह हम प्राप्त कर सकते हैं। इसीलिए कहा गया कि **"स्वर्ग कामो यजेत्"** स्वर्ग की कामना वाले यज्ञ करें।

इस प्रकार संसार का सुव्यवस्थित संचालन व नियन्त्रण का कार्य बाह्य व आन्तरिक केवल, केवल यज्ञ (शुभ कर्मों) से संभव है। इसलिए इस यज्ञ को संसार की नाभि मानना बिलकुल उचित व अर्थपूर्ण है।

यज्ञ कर्म का अर्थ अग्निहोत्र के अतिरिक्त समस्त शुभकर्मों से भी है। याज्ञिक कर्म का अर्थ शुभ कर्मों से है। यज्ञ प्रेरणा देता है हमें शुभ कर्म करने की, क्योंकि देवपूजा, दान, संगतिकरण इसके प्रमुख आधार हैं।

शुभ कर्मों को गहराई से देखें तो वे कार्य जो अपने अतिरिक्त औरों को भी लाभकारी हैं दूसरों को भी सुख पहुंचाने वाले हैं वे शुभ कर्म की श्रेणी में आते हैं। परोपकार, परमार्थ, निष्काम कर्म ये सारे यज्ञिक कर्म कहलाते हैं।

जब मनुष्य के मन में परहित का विचार जाग्रत हो जावे तो स्वार्थ भाव गौण हो जाता है इससे ही विवाद राग–द्वेष का अन्त होता है। स्वार्थ भाव आसुरी और निस्वार्थ भाव देवत्व का प्रतीक है।

भगवान कृष्ण ने इस यज्ञ के महत्व को समझते हुए लिखा –

यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्वषैः।
भुन्जते ते त्वद्यं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात।।

अर्थात् – परमार्थ त्याग जो केवल अपने स्वार्थ लिए दिन–रात भाग–दौड़ कर अपने लिए भोजन व अन्य व्यवस्था करते हैं दूसरों के कल्याण व उपकार की भावना जिनमें नहीं वे पापी हैं मानो पाप ही खा रहे हैं।

अर्थात् – याज्ञिक जीवन वाला ही पुण्यात्मा है, यज्ञ प्रत्येक को करना चाहिए। एक दृष्टान्त आता है – ऋषि चरक ने शिष्य अग्निवेश से कहा पुत्र ये संसार दुःखी हो जावेगा।

शिष्य ने प्रश्न किया गुरूदेव – वह क्यों ?

उत्तर था – दुनिया यज्ञ (याज्ञिक कर्मों) से दूर हो रही है यही कारण है। आज ऋषि चरक की संभावना सत्य घटित हो रही है। इसलिए विश्व के संतुलन हेतु यज्ञ को जीवन का एक अभिन्न अंग मानना चाहिए।

– प्रकाश आर्य, महू

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द

पुस्तकों का जादू

पं. सूर्यकुमार शर्म रईस कानपुर, स्वामीजी के बड़े विरोधी थे। वह स्वामीजी के साथ हुए हलधर के शास्त्रार्थ में उपस्थित थे। जब वहां से चलने लगे तो स्वामीजी की ओर ईंटें फेंकी। फिर कोई स्वामीजी की पुस्तक उनके सामने लाता तो वह क्रोध से उसे फाड़ना ही चाहते थे। किन्तु एक बार पुस्तकों की सुन्दरता देखकर उनका मन उन्हें पढ़ने को हुआ, बस, फिर क्या था। उनके सारे सन्देह उन्हें पढ़कर दूर हो गये और संवत् 1940 में जब आर्य समाज स्थापित हुआ तो वह भी उसके सदस्य बन गये। यह था स्वामीजी की पुस्तकों का जादू जो कट्टर से कट्टर शत्रु को भी मित्र बना देती थी।

101 प्रश्नों का उत्तर

सन् 1869 ई. में प्रयाग के कुंभ मेले पर गंगा के प्रसिद्ध ब्रह्म समाजी नेता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर स्वामीजी से मिलने आये। वार्तालाप के पश्चात उन्होंने स्वामीजी को कलकत्ता आने का निमन्त्रण दिया। उनके साथ एक बंगाली सज्जन माधवचन्द्र चक्रवर्ती भी थे जो बहुत धनी और बड़े तार्किक समझे जाते थे। उन्होंने 101 प्रश्न लिख रक्खे थे और जो धर्मोपदेशक मिलता उसको वे ही प्रश्न पूछकर निरूत्तर कर देते थे। हिन्दू धर्म से उनका विश्वास उठ गया था और वे नास्तिकता और इस्लाम की ओर झुकते जा रहे थे। स्वामी जी के पास आकर भी उन्होंने वे ही 101 प्रश्न पूछे, परन्तु स्वामीजी के तर्क पूर्ण उत्तरों के सामने उनकी एक न चली और उन्होंने सहर्ष स्वामीजी के उपदेश को ग्रहण कर लिया। स्वामीजी के वे इतने कृपा पात्र बन गये कि स्वामीजी ने स्वयं अपने हाथ से सन्ध्या, मन्त्र आदि लिखकर उन्हें दिये, जिनका वे प्रतिदिन जप करने लगे।

सत्य का स्वरूप और सत्यार्थ का ग्रहण करना

जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित करा दे, पश्चात वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्य के अर्थ को ग्रहण और असत्य के अर्थ को परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

www.thearyasamaj.org

बाल सन्देश स्तंभ

ईश्वर

प्र. 1 ईश्वर ने मनुष्य को सबसे अच्छी वस्तु कौन सी प्रदान की है।

प्र. 2 ईश्वर का स्वरूप कैसा है ?

प्र. 3 क्या परमात्मा मनुष्य का रूप धारण कर सकता है।

प्र. 4 ओ३म् शब्द में कितने अक्षर हैं ?

प्र. 5 क्या ईश्वर का ज्ञान बदलता है ?

प्र. 6 ईश्वर कहॉ रहता है ?

प्र. 7 ईश्वर के कितने नाम हैं ?

प्र. 8 ईश्वर कितने प्रकार के होते हैं ?

प्र. 9 सन्ध्या दिन में कितनी बार करने का विधान है ?

प्र. 10 परमात्मा की भक्ति से क्या मिलता है।

उत्तर – 1. बुद्धि 2. निराकार 3. नहीं 4. 3
5. नहीं 6. कण–कण में 7. असंख्य 8. 1
9. 2 10. आनन्द

Remember Allwage

Five goldon principal of life

सदा याद रखें : जीवन के 5 स्वर्णित सिद्धान्त

Dedication	डेडीकेशन	समर्पण
Dicsciplin	डिसीप्लीन	अनुशासन
Devocation	डिवोशन	भक्ति
Duty	ड्यूटी	कर्तव्य
Discrimination	डिस्क्रीमीनेयरल	विवेक

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

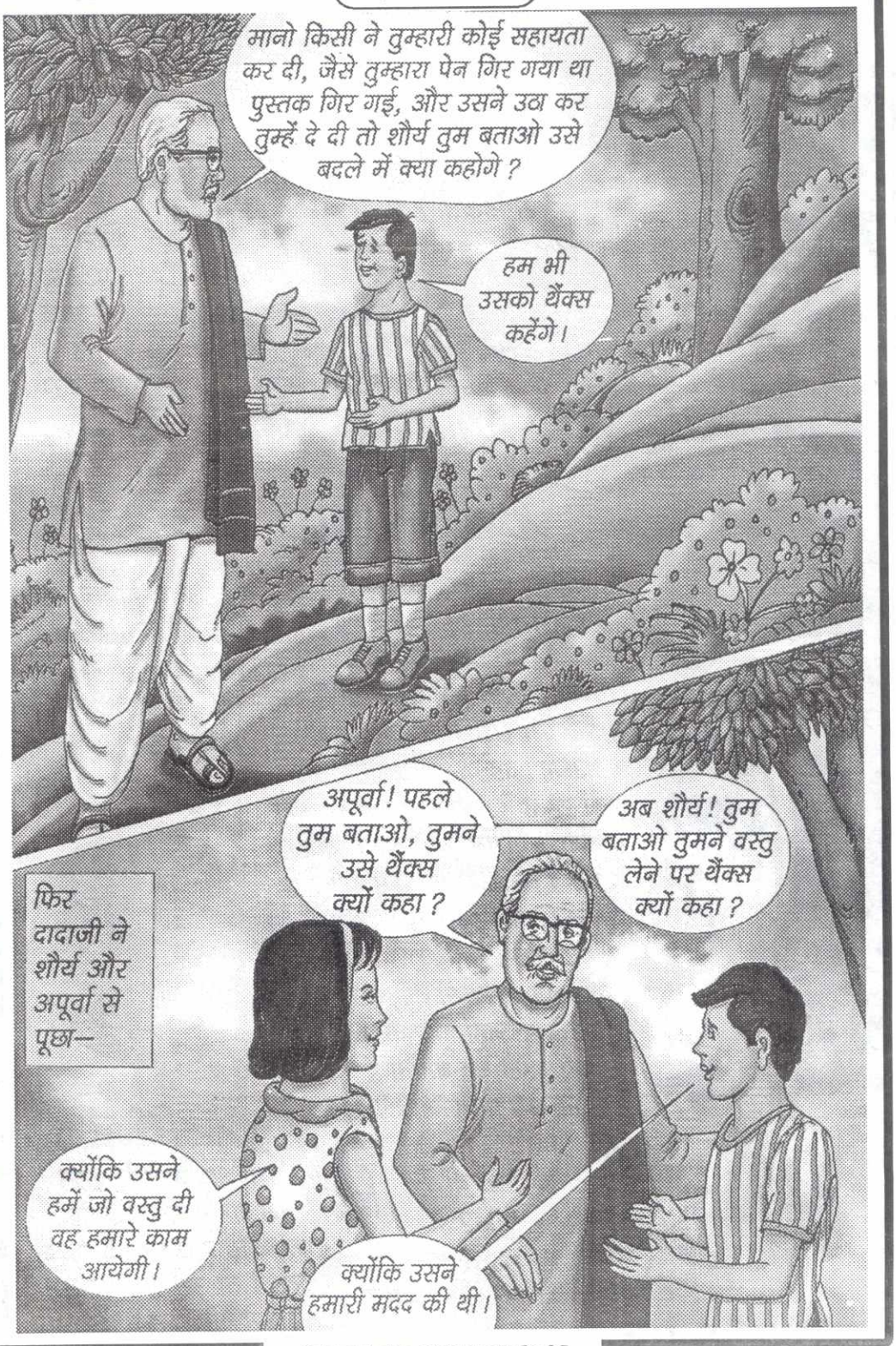

www.thearyasamaj.org

सभा के सहयोग से भोपाल संभाग ग्रामीण अंचल में प्रचार

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा भोपाल संभाग के ग्रामीण अंचल में वैदिक धर्म प्रचारार्थ राजस्थान से पधारे हुए भजनोपदेशक अमरसिंहजी विद्याबाचस्पति को भेजा गया, जिनका सदुपयोग इस क्षेत्र के सिरौंज, लटेरी, व कुरवाई आर्य समाज के द्वारा आयोजित किए गए कार्यक्रमों में किया गया। दिनांक 17 सितम्बर से 19 सितम्बर तक आर्य समाज सिरौंज, दिनांक 20 सित.से 22 सित. तक तीन दिवस आर्य समाज लटेरी, दिनांक 23 से 25 सितम्बर तक वेद मन्दिर में प्रवचन करवाए गए, अंतिम दिवस महिला आर्य समाज के द्वारा दोपहर में यज्ञ के पश्चात् भव्य कार्यक्रम आयोजित कर श्री अमरसिंह जी की विदाई की गई, जिसमें उन्हें आर्य समाज के अध्यक्ष जगमोहनलाल भावसार उनकी धर्म पत्नि श्रीमती सरयू भावसार, तथा मंत्री विशम्भरदयाल सिंघल उनकी धर्मपत्नि श्रीमती सरोज सिंघल के द्वारा वस्त्र भैंट कर सम्मानित किया गया। प्रांतीय सभा के सहयोग से किए गए धर्मप्रचार कार्य से इस क्षेत्र में आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रियता आई है। तीनों आर्यसमाजो के पदाधिकारियों ने प्रांतीय सभा का आभार व्यक्त किया है। इस कार्यक्रम में श्री शिवमुनि जी , प्रवीण कुमार जी, सरजुप्रसादजी एडवोकेट, अरविन्द अग्रवाल, महेश सोनी, जगमोहन लाल, विशम्भरदयाल सिंघल तथा ओमप्रकाश आर्य का विशेष सहयोग रहा।

अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान माधव बाग द्वारा स्वास्थ चर्चा

माधव बाग आयुर्वेद संस्थान जिसकी 160 शाखाएं देख व विदेश में संचालित की जा रही हैं। संस्था द्वारा ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और हार्ट से संबंधित बीमारियों का आयुर्वेद के माध्यम से सफल उपचार किया जाता है।

संस्था द्वारा आर्य समाज, इन्दौर, आर्य समाज महू, आर्य समाज, कोदरिया में इसका आयोजन किया। सैकड़ों व्यक्तियों ने इसमें भाग लेकर स्वास्थ संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रौचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

www.thearyasamaj.org

आर्य परिवार युवक–युवती परिचय सम्मेलन एक अभिनव कान्तीकारी आयोजन

किसी भी संस्था का विकास अथवा पतन उसके स्वर्णिम सिद्धान्तों के पालन या उपेक्षा के कारण से होता है। गुरूवर महर्षि दयानंद और उनके पूर्व आचार्य मनु तथा अनेक विद्वानों ने विवाह सम्बन्धो पर बहुत कुछ लिखा है समाज को मार्ग दर्शन दिया है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश व विशेष कर संस्कार विधि में ग्रहस्थाश्रम के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्देश दिए हैं। गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का आधार है एक श्रेष्ठतम सामाजिक व्यवस्था है व्यक्ति समाज व राष्ट्र निर्माण का स्त्रोत है।

आचार्य मनु कहते है – जिस प्रकार समुद्र में सारी नदियॉ मिलती हैं, वही स्थिति सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम की है।

गृहस्थ आश्रम एक महत्वपूर्ण आश्रम है। किन्तु गृहस्थ आश्रम में प्रवेश मात्र ही सबकुछ नहीं हैं गृहस्थाश्रम स्वर्ग है किन्तु बिना समझे बाहरी दिखावे के प्रभाव में किए गए बेमेल विवाह घोर नर्क का कारण भी बन जाते है। इसलिए गृहस्थाश्रम सुखद, सुरक्षित, सांमजस्य से पूर्ण व सुदृढ़ होना पहली आवश्यकता है। एक गृहस्थ जीवन कब सुखी हो सकता है।

जन्मपत्री, अमीर खानदान, कॉलेज व विद्यालय की पढ़ाई, ऊँचें खनदान को आधार बनाकर ही होने वाले सम्बन्ध बिखर रहे हैं, वैचारिक मतभेद मनभेद तक और फिर न्यायालय में तलाक के आवेदन तक पहुंच जाते है।

सनातन व्यवस्था वर्ण व्यवस्था को स्थान दिया जन्मगत जाति को नहीं। इस मानव विचार धाराओं के कारण उपजी जाति प्रथा ने परिवार, समाज, राष्ट्र, और विश्व को प्रभावित कर मानव जाति को बांट दिया। यह जातिवाद ही आज समाज का सबसे बड़ा कलंक बन कर देश की राजनीति को प्रभावित कर रहा हैं।

आर्य समाज इस कलंक को मिटाना चाहता है गुण, कर्म, और स्वभाव के अनुसार समाज की मान्यता का प्रबल पक्षधर है। आर्यों की विचार धारा के प्रसार सर्वोत्तम उपाय है आर्य परिवारों के युवक युवतियों के वैवाहिक सम्बन्ध जब वर वधू दोनों आर्य परिवार के हो तो सन्तान भी जन्म से उन्हीं संस्कारो में पलवित होकर आर्य ही बनेगे।

आम हिन्दू परिवारों या अन्य सम्प्रदायों में जन्म लेने वाले बच्चों पर जन्म से ही उनके माता के धार्मिक संस्कार होते हैं। किन्तु आर्य समाजियों में यह व्यवस्था अब नगण्य सी है, इस कारण आर्य परिवार के बच्चे भी प्रायः

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज से नहीं जुड़ते। जबरजस्ती इच्छा के विरूद्ध थोपे गए वैवाहिक सम्बन्ध सुखद नहीं होते विवादास्पद बन जाते हैं। जिनका विवाह होना है उनकी सहमति भी लेना आवश्यक है। ताकि गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार योग्य आर्य परिवारों के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध हो सके होने वाले वर वधु एक दूसरे को समझ सके।

इस उद्देश्य से यह परिचय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा हैं। ध्यान रहे घर में दिए वैदिक संस्कारों के अनुरूप जब जीवन साथी नहीं मिलता है तो वैचारिक टकराव बना रहता है। तथा होने वाली सन्तान को पूर्ण वैदिक संस्कार नहीं मिलते – और प्रायः वे भटक जाते हैं।

आज समाज में जाति–दहेज ऊंचनीच जन्मपत्री के कारण व्याप्त मापदण्डों का परिणाम है वैवाहिक सम्बन्धों में अनेक बाधाएं । तो आईए इन सब कुरीतियों व अन्धविश्वासों को जन्मगत जाति के बन्धन को तोडकर एक सुखी–श्रेष्ठ सुदृढ़ गृहस्थाश्रम के माध्यम से विवाह योग्य युवक युवतीयों के सम्बन्ध कीजिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य युवक–युवती सम्मेलन प्रारंभ किया, जिससे अनेक आर्य परिवारों को वैवाहिक संबंध निश्चित हुए। उसी श्रृंखला में **मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में यह सम्मेलन 19 जनवरी 2013 को आर्य समाज, मल्हारगंज, इन्दौर** में सम्पन्न होने जा रहा है।

इस हेतु – 1. परिचय सम्मेलन में भाग लेने वाले युवक 21 वर्ष तथा युवति 18 वर्ष पूर्ण कर चुके हो। भारतीय हो वैदिक सिद्धान्तों व आर्य समाज परिवार हो।

2. निर्धारित प्रारूप भरकर साथ में सहयोग राशि 200/युवक/युवती का व परिवार की पूर्ण जानकारी चित्र सहित प्रेषित करें।

0 कार्यक्रम दिवस पर समस्त आगन्तुक महानुभावों की भोजन व्यवस्था समाज की ओर से निःशुल्क रहेगी।

सम्पर्क करें –

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
प्रधान
म. भा. आर्य प्रति. सभा
मोबा. 9425137097

अर्जुनदेव चढ्ढ़ा
राष्ट्रीय संयोजक
मोबा. 9414187428

प्रकाश आर्य
सभामन्त्री
सार्व. आर्य प्रति. सभा,
मोबा. 9826655117

गोविन्द आर्य
उपप्रधान
इन्दौर संभाग
मोबा. 9424012471

दक्षदेव गौड़
उपमन्त्री
इन्दौर संभाग
मोबा. 9425907070

www.thearyasamaj.org

निमन्त्रण वैदिक ज्ञान का महाकुंभ

गायत्री महायज्ञ, आर्य समाज महू

प्रति दो वर्ष में आर्य समाज महू के तत्वावधान में नगर व ग्रामीण क्षेत्र के हजारों सनातन धर्मियों के सहयोग से एक भव्य आयोजन किया जाता है। इस बार यह षष्ठम आयोजन दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2013 तक मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम में प्रतिदिन योग, आसन, प्राणायाम, यज्ञ, प्रवचन, भजन और रात्रिकालीन सत्र में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया है। आयोजन समिति द्वारा सभी आगन्तुक महानुभावों के निवास और भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की गई है। कार्यक्रम 25 ता. की प्रातः शोभायात्रा और ध्वजारोहण से प्रारंभ, 31 दिसम्बर दोपहर पूर्णाहुति पर समापन होगा।

आमन्त्रित विद्वान एवं अतिथि

आचार्य बलदेवजी (प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), स्वामी रामदेवजी (पातंजलि विद्यापीठ, हरिद्वार), स्वामी अमृतानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्दजी (राजस्थान), स्वामी ऋतस्पतिजी (होशंगाबाद), डॉ. वागिश शर्मा (एटा उत्तर प्रदेश), डॉ. सुरेन्द्रजी (कुलपति गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार), डॉ. वेदप्रताप वैदिक (प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार, मुखर वक्ता), डॉ. सत्यपाल सिंग (पुलिस कमिश्नर, मुम्बई), ब्र. धर्मबन्धुजी (राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वक्ता, संचालक प्रांसला आश्रम, सौराष्ट्र), डॉ. रामपालजी (जयपुर), आचार्या नन्दिताजी (संचालिका–आर्य महाविद्यालय, बनारस) एवं कन्याएँ, श्री भानुप्रताप आर्य (बरेली), श्री रामलाल शास्त्री, डॉ. अखिलेश शर्मा (लातूर, महाराष्ट्र)। कृपया सर्दी को देखते हुए अपने पहनने व ओढ़ने अपने गर्म कपड़े लाए तथा पूर्व सूचना महू के पते पर भेजे।

महर्षि निर्वाण दिवस

इन्दौर नगर की समस्त आर्य समाजों के द्वारा संयुक्त रूप से महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया। जिसमें अभूतपूर्व उपस्थिति रही।

इस अवसर पर न्यायमूर्ति श्री वी. डी. ज्ञानी, साध्वी आत्मदीक्षिता, आचार्य संजयदेवजी तथा सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य के उद्‌बोधन हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनोद अहलुवालिया ने किया तथा आभार डॉ. दक्षदेव गौड़ ने माना।

आर्य वीर दल में अनेक आर्य वीरों का प्रवेश

सभा के प्रशिक्षक श्री प्रतापसिंह आर्य, बालाराम आर्य द्वारा पुराने व नए स्थानों पर आर्य वीर दल की नियमित शाखा लगवा रहे है। अनेक नवयुवक दल में संगठित हो रहे हैं। **काशीराम अनल, कानड़**

www.thearyasamaj.org

सामाजिक उन्नति के साधन
संगठन सूक्त

ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। १।।

अर्थ - हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें है कीजिए धन वृष्टि को ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। २।।

अर्थ - प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो,
पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ।

समानो मंत्रः समितिः समानी-समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।। ३।।

अर्थ - हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सुहासति ।। ४।।

अर्थ - हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा,
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।

महामृत्युञ्जय मन्त्र :

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात् ।।

शांतिमंत्र

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शन्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ
शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003-12367
www.thearyasamaj.org
पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

वैदिक रवि के उद्देश्य व नियम

1. वैदिक रवि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का आमुख पात्र है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इसका प्रमुख उद्देश्य है।
2. यह पत्रिका माह की 27 तारीख को प्रकाशित होती है।
3. आगामी माह की 05 तारीख तक पत्रिका यदि पाठकों तक न पहुंचे तो डाक विभाग द्वारा या कार्यालय से पत्रिका के संबंध में जानकारी प्राप्त करें।
4. पत्रिका का मूल्य 20 रुपये प्रत्येक प्रति, वार्षिक सदस्यता शुल्क 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1000 रु है! आजीवन सदस्यता का तात्पर्य 15 वर्ष की अवधि तक के लिए सदस्यता से है।
5. सदस्यता शुल्क के ड्राफ्ट, चेक, मनीआर्डर आदि 'मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भोपाल में देय होने चाहिए।
6. पत्रिका में छपवाने हेतु भेजे गये लेख, कवितायें आदि माह की 10 तारीख तक कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए उसके बाद प्राप्त होने वाले लेख पत्रिका के विचारार्थ होंगे। विशेष पर्व हेतु भेजे लेख एक माह पूर्व भेजने का कष्ट करें। पत्रिका हेतु भेजे गये लेख साफ एवं स्वच्छ लिपि में कागज पर एक ही ओर लिखे हों यदि टंकित लेख हों तो ज्यादा अच्छा होगा।
7. पत्रिका में आर्य समाज तथा उसकी विचारधारा से संबंधित समाचार, सामाजिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय हित के लेख, समालोचनात्मक निबंध आदि विषयों की सामग्री ही प्रकाशित की जाती है। चमत्कार, पाखण्ड युक्त लेख सामग्री स्वीकार्य नहीं होती।
8. पत्रिका हेतु भेजे गए लेख आदि को संपादित कर लघुकृत करने, छापने अथवा न छापने के सर्वाधिकार संपादक के है इस संबध में कोई पत्राचार स्वीकार नहीं होगा।
9. पत्रिका में छपे लेखों के लेखकों को उनके दिये हुए पते पर पत्रिका का वह अंक जिसमें लेख छपा है नि:शुल्क भेजा जाता है। अप्राप्त होने पर वैदिक रवि कार्यालय या डाक विभाग से सम्पर्क करें।
10. पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार एवं विकास हेतु आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

प्रधान संपादक
वैदिक रवि
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.) 462003

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल ऑफसेट प्रेस, तलैया से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक प्रकाश आर्य

प्रति,

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल 462003 (म.प्र.)